इकाई 15 मगध का उदय*

इकाई की रूपरेखा

15.0 उद्देश्य

15.1 प्रस्तावना

15.2 स्रोतों पर एक नज़र

15.3 मगध के उदय के कारण

15.4 मौर्यों से पहले मगध का राजनीतिक इतिहास

15.5 मौर्य शासकों के अधीन मगध

15.6 अशोक की मृत्यु के समय मगध

15.7 सारांश

15.8 शब्दावली

15.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

15.10 संदर्भ ग्रंथ

15.0 उद्देश्य

इस इकाई में हम संक्षेप में मगध साम्राज्य के राज्य-क्षेत्र के विस्तार की चर्चा करने जा रहे हैं। इससे आपको यह समझने में मदद मिलेगी कि मगध एक ''साम्राज्य'' के रूप में क्यों और कैसे विकसित हुआ। इस इकाई को पढ़ने के बाद आपः

- उन स्रोतों का उल्लेख कर सकेंगे, जिनकी सहायता इतिहासकार इस काल के इतिहास-लेखन के लिए लेते हैं;
- मौर्य शासन से पूर्व मगध के दो शताब्दियों के राजनीतिक इतिहास का संक्षेप में वर्णन कर सकेंगे;
- चंद्रगुप्त और बिंदुसार जैसे आरंभिक मौर्य शासकों और उनके राज्य-विस्तार संबंधी कार्यकलापों की जानकारी दे सकेंगे;
- अशोक मौर्य के राज्यारोहण और राज्याभिषेक के संदर्भ को स्पष्ट कर सकेंगे और कलिंग युद्ध का महत्व बता सकेंगे; और
- यह जान सकेंगे कि अशोक की मृत्यु के समय मगध ''साम्राज्य'' की सीमाएं क्या थीं।

15.1 प्रस्तावना

इकाई 13 में आप *जनपद* और *महाजनपद* से परिचित हो चुके हैं। इनकी जानकारी हमें आरंभिक बौद्ध और जैन ग्रंथों में मिलती है। ये *जनपद* और *महाजनपद* विंध्य के उत्तर में स्थित थे। इनका काल प्रथम सहस्राब्दी बी.सी.ई. के उत्तरार्द्ध में पड़ता है। इस इकाई में हम एक महत्वपूर्ण *महाजनपद* मगध के विकास पर विस्तार से चर्चा करने जा रहे हैं। पिछले दो सौ वर्षों से इतिहासकारों का ध्यान मगध की ओर जाता रहा है। इसका महत्वपूर्ण कारण यह है कि यह जाने-माने मौर्य साम्राज्य का केन्द्र-बिन्दु था।

* यह इकाई ई.एच.आई.-02, खंड-5 से ली गई है।

छठी शताब्दी बी.सी.ई. से ही मगध राज्य का विस्तार शुरू हो गया था, हालांकि नंदों और मौर्यों के अधीन इसमें तेजी आई। विभिन्न भागों में अशोक के अभिलेखों की उपस्थिति से यह संकेत मिलता है कि सुदूर पूरब और दक्षिण के क्षेत्रों को छोड़कर भारतीय उपमहाद्वीप का अधिकांश भाग मगध संप्रभुता के अधीन था। मगध के क्षेत्रीय विस्तार पर विस्तार से चर्चा करने के बाद हम इस तथ्य पर भी विचार करेंगे कि मगध साम्राज्य की बनावट और संरचना में इतनी विविधता थी और इसका फैलाव इतना व्यापक था कि प्रत्यक्षतः राजनीतिक नियंत्रण रखना संभवतः बहुत कठिन था। इससे शायद यह समझने में सहायता मिलेगी कि क्यों अशोक ने समाज में व्याप्त तनाव को कम करने के लिए *धम्म* का सहारा लिया। इसकी विस्तार से चर्चा इकाई 17 में की गई है।

15.2 स्रोतों पर एक नज़र

आरम्भिक बौद्ध और जैन साहित्य में मध्य गंगा के मैदान, जहां मगध स्थित था, की घटनाओं और परम्पराओं का काफ़ी उल्लेख किया गया है। बौद्ध परम्परा का कुछ साहित्य *त्रिपिटकों* और *जातकों* में संगृहित है। जैन परम्परा के दो ग्रंथ – *अचारंग सूत्र* और *सूत्रकृतांग* – अन्य ग्रन्थों से पुराने माने जाते हैं, हालांकि ये सभी ग्रंथ छठी शताब्दी बी.सी.ई. के बाद विभिन्न चरणों में लिखे और संगृहित किए गए। जैन और बौद्ध परम्परा के ग्रन्थ आरंभिक राजनीतिक गतिविधियों को बाद में संगृहित हुये ब्राह्मण ग्रंन्थों (जैसे *पुराण*) से अधिक प्रामाणिक रूप में और सीधे तौर पर प्रस्तुत करते हैं। *पुराणों* में गुप्तकाल तक के शाही राजवंशों का इतिहास प्रस्तुत करने की कोशिश की गई है। *महावंश* और *दीपवंश* प्रमुख परवर्ती बौद्ध ऐतिहासिक ग्रंथ हैं, जिनका संग्रहण श्रीलंका में हुआ। ये ग्रंथ अशोक के शासनकाल के महत्वपूर्ण स्रोत हैं। इसके अतिरिक्त, *दिव्यवदान* भारत के बाहर तिब्बत और चीनी बौद्ध स्रोतों में सुरक्षित एक महत्वपूर्ण बौद्ध ग्रंथ है। परन्तु इन स्रोतों का उपयोग काफ़ी सावधानी से करना चाहिए क्योंकि इनकी रचना भारत से बाहर बौद्ध धर्म के प्रचार के संदर्भ में हुई थी।

विदेशी स्रोतों से प्राप्त सूचनाएं अपेक्षाकृत अधिक प्रासंगिक और लगभग समकालीन हैं। इनमें यूनानी और लैटिन के ''क्लासिकल ग्रंथों'' से प्राप्त सूचनाएं उल्लेखनीय हैं। ये उन लोगों के लिखे यात्रावृतांत हैं जिन्होंने उस समय भारत का भ्रमण किया। इनमें मेगस्थनीज़ काफ़ी चर्चित और जाना-पहचाना नाम है, जो चन्द्रगुप्त मौर्य के काल में भारत आया था और वह राजा के दरबार में भी गया था। मेगस्थनीज़ का वृतांत हमें प्रथम शताब्दी बी.सी.ई. के स्ट्रैबो और डियोडोरस तथा द्वितीय शताब्दी सी.ई. के एरियन के यूनानी ग्रंथों के द्वारा मिलता है। छठी से चौथी शताब्दी बी.सी.ई. तक उत्तर-पश्चिमी भारत विदेशी शासकों के अधीन था। अतः अकेमेनी (ईरानी) शासन और बाद में सिकन्दर के आक्रमण के विषय में जानकारी हमें फ़ारसी अभिलेखों और डियोडोरस की रचना जैसे यूनानी स्रोतों से मिलती है।

कौटिल्य के *अर्थशास्त्र* की खोज 1905 में हुई। यह मौर्य काल से संबंधित महत्वपूर्ण स्रोत माना जाता है। हाल ही में *अर्थशास्त्र* के लेखन-काल के संबंध में नए विचार सामने आए हैं, जिनके अनुसार इस ग्रंथ का लेखन पूर्ण रूप से मौर्य काल में नहीं हुआ था। सांख्यिकीय गणना के आधार पर यह मान्यता सामने आई है कि *अर्थशास्त्र* के कुछ अध्यायों का लेखन सामान्य युग की प्रथम दो शताब्दियों में हुआ होगा। इसके बावजूद कई अन्य विद्वान इस ग्रन्थ के अधिकांश हिस्से को मौर्य काल का लेखन मानते हैं। उनकी मान्यता है कि मूल ग्रन्थ चंद्रगुप्त के मंत्री कौटिल्य द्वारा लिखा गया था; बाद के वर्षों में अन्य विद्वानों ने इसका विस्तार और सम्पादन किया।

अभिलेख और सिक्के मौर्य काल की जानकारी के अन्य महत्वपूर्ण स्रोत हैं, जो प्राचीन भारत में मौर्य काल की महत्ता पर प्रकाश डालते हैं। हालांकि इस काल के सिक्कों पर राजा का नाम अंकित नहीं है और उन्हें आहत (Punch Marked) सिक्के कहा जाता है क्योंकि उन पर कई प्रकार के चिन्ह अंकित होते थे। हालांकि इस प्रकार के पंच मार्क्ड सिक्के लगभग पांचवी शताब्दी बी.सी.ई. से ही मिलते लगते हैं, परन्तु मौर्य काल के पंच मार्क्ड सिक्के इस दृष्टि से महत्वपूर्ण थे कि वे शायद एक केन्द्रीय प्राधिकरण द्वारा जारी किए जाते थे क्योंकि उनके चिन्हों में एकरूपता है। सिक्कों के अलावा अन्य अभिलेखीय सामग्री, खासकर अशोक मौर्य के शासन के संदर्भ में, महत्वपूर्ण सूचनाएं देती है और यह अपने आप में एक विशेष बात है। अशोक के 14 वृहत शिलालेख, सात लघु शिलालेख, सात स्तम्भ लेख और अन्य अभिलेख पूरे भारतीय उपमहाद्वीप के महत्वपूर्ण नगरों और व्यापार मार्गों पर पाए गए हैं। ये अभिलेख अशोक के शासन के अंतिम चरण में मौर्य साम्राज्य के विस्तार के साक्षात प्रमाण हैं।

हाल के वर्षों में, पुरातात्विक जानकारी एक महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में सामने आई है और इससे गंगा घाटी की भौतिक संस्कृति के महत्वपूर्ण तथ्य सामने आए हैं। हम जानते हैं कि उत्तरी काली पॉलिश किए बर्तनों के काल के पुरातात्विक साक्ष्य उस समय से सम्बद्ध हैं जब शहरों और नगरों का उदय हुआ। पुरातात्विक साक्ष्य इस तथ्य को सामने लाते हैं कि मौर्य काल में लोगों के भौतिक जीवन में और भी परिवर्तन आए। पुरातत्व की सहायता से ही हम यह भी जान पाते हैं कि भौतिक संस्कृति के कई तत्व गंगा घाटी से बाहर फैलने लगे और वे मौर्य शासन से संबंधित माने जाने लगे।

15.3 मगध के उदय के कारण

इकाई 13 में आपको आमतौर पर मगध के राज्य को 16 *महाजनपदों* में से एक के रूप में अवगत कराया जा चुका है। ये *महाजनपद* गंगा घाटी में एक बड़े क्षेत्र पर स्थित थे। कुछ उत्तर-पश्चिम और दक्षिण-पश्चिम में भी स्थित थे। हालांकि, चार सबसे शक्तिशाली राज्यों में से तीन – कोसल, वज्जि संघ और मगध – मध्य गंगा घाटी में स्थित थे और चौथा, अवन्ति पश्चिमी मालवा में था। मगध को चारों ओर से घेरने वाले राज्यों में पूर्व में अंग, उत्तर में वज्जि संघ, इसके तत्काल पश्चिम में काशी का राज्य और पश्चिम में कोसल राज्य थे।

मगध की पहचान वर्तमान बिहार राज्य में पटना, गया, नालंदा और शाहबाद के कुछ भागों से की जा सकती है। भौगोलिक रूप से मगध की स्थिति ऐसी थी कि इसके आसपास बड़े इलाकों में जलोढ़ मिट्टी वाली ज़मीनें थीं। यह भूमि काफ़ी उपजाऊ साबित हुई और लोहे के औज़ारों की मदद से इसको आसानी से जोता जा सकता था। प्रारंभिक बौद्ध ग्रन्थों में ऐसा वर्णन है कि धान की विभिन्न किस्मों को उगाया जाता था। इसने किसानों को पर्याप्त अधिशेष पैदा करने में सक्षम बनाया जिसने करों की मात्रा को बढ़ाया।

मगध को हाथियों की आसान आपूर्ति का लाभ भी था। वास्तव में, मगध उन कुछ क्षेत्रों में से एक था जिन्होंने युद्धों में बड़े पैमाने पर हाथियों का इस्तेमाल किया और इस तरह से दूसरे क्षेत्रों पर बढ़त हासिल कर ली थी। हाथी आसानी से पूर्व दिशा के क्षेत्रों से प्राप्त किये जा सकते थे। ग्रीक (यूनानी) स्रोतों के अनुसार, नन्दों ने 6000 हाथियों की सेना कायम की थी। घोड़ों और रथों पर हाथियों की श्रेष्ठता इसलिए भी थी क्योंकि उनका उपयोग दलदली भूमि और क्षेत्रों में कूच के लिए किया जा सकता था जहाँ कोई सड़क या परिवहन के अन्य साधन नहीं थे।

आर. एस. शर्मा का मानना है कि मगध के अपराम्परागत सामाजिक ढाँचे के स्वरूप के कारण यह शासकों की विस्तारवादी नीतियों के प्रति ज़्यादा संग्रहणशील था। मगध में वैदिक और गैर-वैदिक लोगों का एक सुखद मिश्रण था जिनका दृष्टिकोण रूढ़िवादी वैदिक समाजों की तुलना में अलग था। दिलचस्प बात यह है कि मगध की प्राचीनतम राजधानी राजगृह (गिरिव्रज) नदी के दक्षिण में स्थित थी न कि उसके करीब। राजगृह पाँच पहाड़ियों से घिरा हुआ था और अभेद्य साबित हुआ। इससे ना केवल रणनीतिक स्थिति का लाभ मिला, बल्कि लोहे से घिरे पपड़ीदार पहाड़ी क्षेत्र भी इसके आस-पास मौजूद थे। यह भी सुझाव दिया गया है कि तांबे के साथ-साथ वर्तमान दक्षिण बिहार क्षेत्र के जंगलों तक इसकी पहुँच प्रभावी रूप से बता सकती है कि प्रारंभिक मगध नरेशों ने गंगा घाटी के सबसे उपजाऊ मैदानों को अपनी राजधानी के रूप में नहीं चुना बल्कि उसे अपेक्षाकृत एक अलग-थलग क्षेत्र में बनाया। मगध की राजधानी हालांकि पाटलिपुत्र (मूल रूप से पाटली ग्राम) में स्थानान्तरित कर दी गई जो गंगा, गंडक, सोन और पुनपुन जैसी कई नदियों के संगम पर स्थित था। उत्तर, पश्चिम, दक्षिण और पूर्व की दिशा में गतिशील सेना के द्वारा नदियों को संचार मार्ग के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता था। इसके अलावा, नदियों से घिरे होने के कारण यह भूमि अभेद्य हो गयी जिससे वास्तव में यह *जलदुर्ग* के रूप में काम कर रही थी। मौर्यों के अन्तर्गत पाटलिपुत्र मगध की राजधानी बन गयी। इसने मगध को *उत्तरापथ* को प्रभावी ढंग से नियंत्रित करने में सक्षम बनाया, जो हिमालय की तलहटी के साथ-साथ गंगा नदी के उत्तर में स्थित था। मगध को विभिन्न क्षेत्रों से जोड़ने और नदी में भारी परिवहन को संभव बनाने के लिए नदी ने एक प्रमुख संचार मार्ग के रूप में कार्य किया। इस प्रकार मगध को अपने समकालीन राज्यों पर कुछ स्वाभाविक अनूकूल परिस्थितियाँ प्राप्त थीं, हालांकि इनमें से कुछ, जैसे इसके दक्षिण-पश्चिम में अवन्ति, उत्तर-पश्चिम में कोसल और उत्तर में वज्जि संघ छठी शताब्दी बी.सी.ई. की शुरुआत में समान रूप से शक्तिशाली थे।

हाल के शोधों ने सुझाव दिया है कि मगध और अवन्ति जैसे राज्यों की लोहे के खनन क्षेत्रों तक पहुंच ने इन्हें ना केवल युद्ध के लिए अच्छे हथियारों का उत्पादन करने में सक्षम बनाया, बल्कि कई अन्य तरीकों से भी फ़ायदा पहुँचाया। इसने कृषि व्यवस्था के विस्तार को सुविधाजनक बनाया और इस प्रकार करों के रूप में पर्याप्त अधिशेष के उत्पादन में भी मदद की। इसकी बदौलत इसने उन्हें अपने क्षेत्रीय आधार को विस्तृत और विकसित करने में सक्षम बनाया। अवन्ति, यह ध्यान दिया जाना चाहिए, काफ़ी समय के लिए मगध का एक गंभीर प्रतिद्वन्द्वी बन गया और वह पूर्वी मध्य प्रदेश में लोहे की खानों से अधिक दूर स्थित नहीं था। अवन्ति ने कौशाम्बी के वत्सों को हराया और मगध पर आक्रमण करने की योजना बनाई। अजातशत्रु ने इस खतरे की प्रतिक्रिया में राजगीर की किलाबन्दी शुरू की, जिसकी दीवारों के अवशेष आज भी देखें जा सकते हैं। हालांकि अन्ततः आक्रमण नहीं हुआ।

मगध एक ऐसे क्षेत्र में स्थित था जिसमें इमारती लकड़ी की प्रचुरता थी। मेगस्थनीज़ ने मगध में लकड़ी की दीवारों और घरों के बारे में टिप्पणी की है। छठी शताब्दी बी.सी.ई. के लकड़ी के घेरे के अवशेष पटना के दक्षिण में पाये गये हैं। इमारती लकड़ी का उपयोग आसानी से नावों के निर्माण के लिए किया जा सकता था जिसके द्वारा मगध की सेना पूर्व और पश्चिम में आगे बढ़ सकती थी।

बोध प्रश्न 1

1) पांच पंक्तियों में उन महत्वपूर्ण स्रोतों का उल्लेख कीजिए जिनसे मगध के इतिहास की पुनर्रचना में सहायता मिली है।

.....

.....

.....

.....

.....

2) उन तीन महत्वपूर्ण कारकों का उल्लेख कीजिए जिनसे मगध राज्य के विकास में सहायता मिली।

.....

.....

.....

.....

.....

15.4 मौर्यों से पहले मगध का राजनीतिक इतिहास

छठी-पांचवी शताब्दी बी.सी.ई. के दौरान बिम्बिसार के नेतृत्व में मगध मध्य गंगा के मैदान के प्रमुख दावेदार के रूप में तेजी से उभरा। बिम्बिसार बुद्ध का समकालीन था। बिम्बिसार मगध का प्रथम महत्वपूर्ण शासक माना जाता है। राजनीतिक दूरदर्शिता का परिचय देते हुए उसने कोसल के राजघराने से वैवाहिक संबंध स्थापित किया। इस विवाह में उसे काशी का एक जिला दहेज के रूप में मिला। गांधार के राज्य के साथ उसका संबंध सौहार्दपूर्ण था। इन कूटनीतिक संबंधों को मगध की शक्ति का प्रतीक माना जा सकता है। मगध के उत्तर में अंग राज्य था, जिसकी राजधानी चम्पा एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केन्द्र थी। चम्पा एक महत्वपूर्ण नदी-बंदरगाह था। कहा जाता है कि बिम्बिसार के आधिपत्य में 80,000 गांव थे। परम्परागत सूत्रों से पता चलता है कि अजातशत्रु ने अपने पिता बिम्बिसार को बंदी बना लिया था और वह (बिम्बिसार) भूख से तड़प-तड़प कर मर गया था। ऐसा माना जाता है कि यह घटना 492 बी.सी.ई. के आसपास घटी होगी।

आंतरिक समस्याओं और गद्दी पर अजातशत्रु के बैठने से मगध की नियति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। मगध के नए राजा ने आक्रामक नीति अपनाई और अपने राज्य क्षेत्र का विस्तार किया। उसने काशी पर अधिकार कर लिया और अपने मामा, कोसल के नरेश प्रसेनजित से सौहार्द का संबंध समाप्त कर उन पर आक्रमण कर दिया। गंगा के दक्षिण तक फैला हुआ वज्जि गणराज्य अजातशत्रु के आक्रमण का अगला निशाना बना। वज्जि संघ के साथ युद्ध का सिलसिला लगभग 16 वर्षों तक चलता रहा। अंत में अजातशत्रु वहां आंतरिक कलह पैदा कर धोखे से उसे पराजित करने में सफल हुआ। अपने शक्तिशाली शत्रु अवंति पर आक्रमण की पूरी तैयारी अजातशत्रु ने कर ली थी परन्तु आक्रमण किन्हीं कारणों से सम्पन्न न हो सका। फिर भी, उसके शासनकाल में काशी और वैशाली (वज्जि *महाजनपद* की राजधानी) मगध के अधीन आ चुके थे। इस प्रकार, मगध गांगेय प्रदेश में सबसे शक्तिशाली राज्य माना जाने लगा।

यह माना जाता है कि अजातशत्रु ने 492 से 460 बी.सी.ई. तक राज किया। उदयन (460-444 बी.सी.ई.) उसका उत्तराधिकारी था। उदयन के राज्यकाल में मगध का क्षेत्र उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में छोटा नागपुर की पहाड़ियों तक फैला हुआ था। यह कहा जाता है कि उसने गंगा और सोन के मुहाने पर एक किला बनवाया था। उदयन के शासनकाल

में राज्य क्षेत्र काफ़ी विस्तृत था, परन्तु वह इन पर कुशल शासन करने में असक्षम था। उदयन के बाद चार शासक एक के बाद एक गद्दी पर बैठे, परन्तु वे अयोग्य सिद्ध हुए। ऐसा माना जाता है कि अंतिम राजा को मगध की जनता ने राज सिंहासन से उतार दिया। 413 बी.सी.ई. में बनारस के राज्यपाल शिशुनाग को राजा नियुक्त किया गया। शिशुनाग वंश ने थोड़े समय तक राज्य किया और महापद्मनन्द ने राज्य पर अधिकार कर नंद वंश की शुरुआत की।

326 बी.सी.ई. उत्तर-पश्चिमी भारत पर सिकन्दर के समय मगध और लगभग सम्पूर्ण गंगा के मैदान में नन्द वंश का शासन था। यहीं से भारतीय इतिहास का ऐतिहासिक काल शुरू होता है। इस कारण नन्दों को कभी-कभी भारत का प्रथम साम्राज्य-निर्माता कहा जाता है। उन्हें केवल मगध का राज्य विरासत में मिला था और उसके बाद उन्होंने उसकी सीमा का और विस्तार किया।

परवर्ती *पुराण* ग्रंथों में महापद्मनन्द का उल्लेख क्षत्रियों के विनाशकर्त्ता के रूप में हुआ है। यह भी कहा गया है कि उसने समकालीन सभी राजघरानों से शक्ति छीन ली। यूनानी ग्रन्थ नंद साम्राज्य की शक्ति का उल्लेख करते हुए बताते हैं कि नंदों के पास विशाल सेना थी जिसमें 20,000 घुड़सवार, 2,00,000 पैदल सैनिक, 2,000 रथ और 3,000 हाथी थे। इस बात के भी संकेत मिले हैं कि नंदों के संबंध दक्कन और दक्षिण भारत से भी थे। राजा खारवेल के हाथीगुम्फा अभिलेख में इस बात का संकेत है कि कलिंग (आधुनिक उडीशा) के कुछ हिस्सों पर नंद वंश का अधिकार था। राजा खारवेल का शासनकाल प्रथम शताब्दी बी.सी.ई. के मध्य में था।

दक्षिण कर्नाटक के कुछ बाद के अभिलेखों से भी पता चलता है कि नंद वंश के नेतृत्व में दक्कन के कुछ हिस्सों पर मगध का अधिकार था। अधिकांश इतिहासकारों का यह मानना है कि महापद्मनंद के शासनकाल के अंतिम चरण में मगध साम्राज्य के विस्तार और सुदृढ़ीकरण का पहला चरण समाप्त हो गया। सिकन्दर के आक्रमण का हवाला देते हुए यूनानी ग्रंथ उल्लेख करते हैं कि इस समय उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र छोटे-छोटे राज्यवंशों के बीच विभक्त था। यह भी स्पष्ट है कि मगध राज्य और यूनानी विजेता के बीच कोई युद्ध नहीं हुआ।

321 बी.सी.ई. में नंद वंश का पतन हो गया। इस दौरान नौ नंद राजाओं ने शासन किया और यह कहा जाता है कि अपने शासन के अंतिम दिनों में वे काफ़ी अलोकप्रिय हो गए थे। चंद्रगुप्त मौर्य ने इस स्थिति का फ़ायदा उठाया और मगध के सिंहासन पर अधिकार जमा लिया। इन सभी परिवर्तनों के बावजूद मगध गंगा घाटी का सर्वशक्तिमान राज्य बना रहा। मगध की भौगोलिक स्थिति उसकी सफलता के कारणों में प्रमुख है। इसके अतिरिक्त, लोहा उसे सहज सुलभ था और प्रमुख स्थल और जल व्यापार मार्ग पर उसका नियंत्रण था। इन सभी का उल्लेख इस इकाई में पहले किया जा चुका है।

15.5 मौर्य शासकों के अधीन मगध

डी. डी. कोसाम्बी का यह मानना है कि सिकन्दर के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र पर आक्रमण का तात्कालिक और अप्रत्याशित परिणाम यह हुआ कि इसने सम्पूर्ण देश पर मौर्यों की विजय का रास्ता प्रशस्त कर दिया। उनका तर्क है कि इससे पंजाब के गणराज्य कमज़ोर हो गए और चन्द्रगुप्त के नेतृत्व में मगध की सेना को संपूर्ण पंजाब पर विजय हासिल करने में किसी विशेष कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ा। गंगा घाटी के अधिकांश भाग पर मगध का पहले से ही अधिकार था। प्राचीन ग्रंथ इस बात का हवाला देते हैं कि चन्द्रगुप्त

सिकन्दर से मिला था और उसने सिकन्दर को मगध पर आक्रमण करने की सलाह दी थी जो उस समय अलोकप्रिय नंदों के अधीन था। हालांकि इस तथ्य की जांच करना कठिन कार्य है, परन्तु भारतीय और अन्य ''क्लासिकल स्रोत'' इस बात का हवाला देते हैं कि सिकंदर के वापस जाने से एक रिक्तता का माहौल कायम हो गया और इसके बाद चन्द्रगुप्त के लिये यूनानी दुर्गों पर अधिकार जमाना कठिन कार्य नहीं रहा। इसके बावजूद यह स्पष्ट नहीं है कि चन्द्रगुप्त ने यह कार्य गद्दी प्राप्त करने के बाद किया या उससे पहले ही उसने इन इलाकों पर अधिकार जमा लिया था। कुछ विद्वान उसके राज्यारोहण का वर्ष 324 बी.सी.ई. मानते थे परन्तु अब 321 बी.सी.ई. का समय सर्वमान्य है।

भारतीय परम्परागत स्रोत इस बात का हवाला देते हैं कि चन्द्रगुप्त ने एक ब्राह्मण, कौटिल्य जो चाणक्य या विष्णुगुप्त के नाम से भी जाना जाता था, की सहायता से मगध का राज सिंहासन प्राप्त किया था। छठी शताब्दी सी.ई. में लिखे एक नाटक में भी यह कहा गया है कि 25 वर्ष की आयु में जिस समय चन्द्रगुप्त ने नंद वंश को अपदस्थ किया था, उस समय चन्द्रगुप्त एक कमज़ोर शासक था और वास्तविक सत्ता चाणक्य के हाथ में थी। *अर्थशास्त्र* के लेखक चाणक्य के बारे में बताया जाता है कि वह न केवल युद्ध के राजनीतिक सिद्धांतों का ज्ञाता था बल्कि वह साम्राज्य को ध्वस्त होने से बचाने के लिए उपयुक्त राज्य और समाज के गठन के विषय में भी अच्छी जानकारी रखता था।

हालांकि चंद्रगुप्त के शासन के आरंभिक वर्षों के बहुत कम तथ्य प्रकाश में आए हैं, परन्तु अधिकांश इतिहासकार इस बात से सहमत हैं कि मौर्य परिवार का संबंध किसी निम्न जाति या कबीले से था। कुछ तथ्य इस बात का संकेत करते हैं कि चन्द्रगुप्त अंतिम नंद राजा और निम्न जाति की स्त्री मुरा का पुत्र था, इसी से उस परिवार का नाम मौर्य पड़ गया। बौद्ध स्रोतों के अनुसार वह पिप्लिवन के मोरिया वंश के परिवार का सदस्य था। इन स्रोतों के अनुसार चन्द्रगुप्त का संबंध उस शाक्य कबीले से था जिसमें बुद्ध का जन्म हुआ था। इस मत के अनुसार मौर्य नाम उसी कबीले के नाम से उद्भूत हुआ है। अप्रत्यक्ष रूप से इसका अर्थ यह है कि चन्द्रगुप्त एक पुराने सरदार का वंशज था और इस प्रकार उसका संबंध किसी न किसी प्रकार क्षत्रिय कुल से था। *पुराणों* में नंद वंश और मौर्य राजवंश में कोई संबंध नहीं बताया गया है, परन्तु वे भी मौर्यों को शूद्र का दर्जा देते हैं। हालांकि ब्राह्मण ग्रंथों की यह समझ उस आरंभिक मगध के समाज पर आधारित थी जिसमें अनैतिकता का बोलबाला था और जाति मिश्रण विद्यमान था। क्लासिकल ग्रंथों में भी अंतिम नंद राजा और चंद्रगुप्त (सैंड्राकोटस के रूप में) का उल्लेख है, परन्तु वे इन दोनों राज्य वंशों में किसी संबंध की बात नहीं करते। यह भी कहा गया है कि चन्द्रगुप्त के नाम में ''गुप्त'' लगा होना और अशोक द्वारा अपनी बेटी की शादी विदिशा के व्यापारी से करना इस तथ्य की पुष्टि करता है कि मौर्यों का संबंध वैश्य जाति से था।

हालांकि मौर्यों की जाति के संबंध में स्थिति अस्पष्ट है, परन्तु यह उल्लेखनीय है कि इस राजवंश के अधिकांश महत्वपूर्ण राजाओं ने अपने जीवन के अंतिम प्रहर में असनातनिय धर्मों को ही अपनाया। दूसरी तरफ़, इस तथ्य को भी नज़रअंदाज नहीं किया जा सकता है कि चंद्रगुप्त के परामर्शदाता और प्रेरक शक्ति के रूप में ब्राह्मण कौटिल्य ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। *पुराणों* में तो यहां तक कहा गया है कि चाणक्य ने चंद्रगुप्त को राजा नियुक्त किया था। ऐसा कहा जा सकता है कि मौर्यों ने उस समाज में सत्ता प्राप्त की जो कभी भी रूढ़िवादी नहीं था। उत्तर-पश्चिम में विदेशियों के साथ काफ़ी सम्पर्क बना रहा। रूढ़िवादी ब्राह्मण परम्परा में मगध को हमेशा नीची दृष्टि से देखा गया है। मगध बुद्ध और महावीर के विचारों से भी काफ़ी प्रभावित था। इस प्रकार, एक सामाजिक और राजनीतिक अव्यवस्था के बीच चंद्रगुप्त मगध का सिंहासन प्राप्त करने में सफल हुआ।

बहुत से इतिहासकार मौर्य राज्य के क्षेत्रीय विस्तार के कारण ही उसे साम्राज्य का दर्जा देते हैं। इनके विचार से साम्राज्य निर्माण में चंद्रगुप्त की भूमिका काफ़ी महत्वपूर्ण थी क्योंकि उसने उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र में विदेशी आक्रमणकारियों की बाढ़ को रोका और पश्चिमी तथा दक्षिणी भारत में स्थानीय राजाओं को कुचल दिया। इन सैनिक कार्यवाहियों का ठीक-ठाक और सीधा ब्यौरा कहीं नहीं मिलता है। अतः केवल मगध के परवर्ती शासकों से संबंधित स्रोतों में उसकी विजयों संबंधी यत्र-तत्र बिखरी सूचनाओं पर ही निर्भर रहना पड़ता है।

भारतीय और ''क्लासिकल स्रोत'' इस बात का हवाला देते हैं कि चंद्रगुप्त ने नंद वंश के अंतिम राजा को अपदस्थ कर राजधानी पाटलिपुत्र पर अधिकार जमाया और 321 बी.सी.ई. में मगध के राज सिंहासन पर बैठा। जैसा कि पहले बताया जा चुका है, चंद्रगुप्त के राजनीतिक उत्थान का संबंध उत्तर-पश्चिम में सिकन्दर के आक्रमण से भी था। 325 बी.सी.ई. से 323 बी.सी.ई. का काल इस दृष्टि से निर्णायक था क्योंकि सिकन्दर के आक्रमण के बाद उत्तर-पश्चिम में नियुक्त उसके सारे सेनापतियों का या तो कत्ल हो चुका था या वे वापस लौट गए थे। चन्द्रगुप्त ने इस स्थिति का फ़ायदा उठाया और इन इलाकों पर अधिकार जमा लिया। यहाँ इस बात को लेकर विवाद है कि चंद्रगुप्त ने पहले नंदों को उखाड़ फेंका या पहले विदेशियों को हराया। कुछ भी हो, यह कार्य 321 बी.सी.ई. तक सम्पन्न हो चुका था और राज्य के सुदृढ़ीकरण का रास्ता प्रशस्त हो गया था। सैनिक विजय की दृष्टि से चंद्रगुप्त मौर्य की पहली उपलब्धि 305 बी.सी.ई. के आसपास सेल्यूकस निकेटर से युद्ध करना था। सेल्यूकस सिंधु नदी के पश्चिमी प्रदेश पर राज करता था। 303 बी.सी.ई. में अंततः लम्बे युद्ध के बाद चंद्रगुप्त की विजय हुई और इस यूनानी दूत के साथ एक संधि हुई। इस संधि के मुताबिक चंद्रगुप्त ने सेल्यूकस को 500 हाथी दिए, बदले में सेल्यूकस ने चंद्रगुप्त को अफ़ग़ानिस्तान, बलूचिस्तान और सिंधु का पश्चिमी इलाका दे दिया।

एक वैवाहिक संबंध भी स्थापित हुआ। सेल्यूकस का राजदूत मेगस्थनीज़ कई वर्षों तक चंद्रगुप्त के दरबार में रहा। यह एक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी, क्योंकि इस प्रकार सिंधु एवं गंगा का मैदान चंद्रगुप्त के नियंत्रण में आ गए और मौर्य साम्राज्य की सीमाएं निर्धारित हो गयीं।

अधिकांश विद्वानों का यह मानना है कि चंद्रगुप्त ने केवल उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र और गंगा के मैदान पर ही अपना प्रभुत्व नहीं स्थापित किया था बल्कि पश्चिमी भारत और दक्कन के क्षेत्रों पर भी उसका नियंत्रण था। केवल आधुनिक केरल, तमिलनाडु और भारत के उत्तर-पश्चिमी इलाके उसके राज्य-क्षेत्र में शामिल नहीं थे। परन्तु इन विजय-अभियानों का विस्तृत ब्यौरा अभी तक प्राप्त नहीं हुआ है। यूनानी लेखकों ने अपने ग्रंथों में केवल इस बात का संकेत दिया है कि चंद्रगुप्त मौर्य ने 6,00,000 की अपनी विशाल सेना की सहायता से पूरे भारत को रौंद डाला था। दूसरी शताब्दी सी.ई. के मध्य के रुद्रदमन के जूनागढ़ शिला अभिलेख से पता चलता है कि चंद्रगुप्त ने सुदूर पश्चिम में सौराष्ट्र या काठियावाड़ पर विजय प्राप्त की थी और उसे अपने साम्राज्य में मिला लिया था। इसमें चंद्रगुप्त के राजदूत पुष्यगुप्त का उल्लेख है जिसने प्रसिद्ध सुदर्शन झील का निर्माण करवाया था। इससे यह भी पता चलता है कि मालवा क्षेत्र भी चंद्रगुप्त के नियंत्रण में था। बाद के स्रोतों से यह भी पता चलता है कि दक्कन के क्षेत्र पर भी उसका अधिकार था। कुछ मध्ययुगीन पुरालेखों में इस बात का उल्लेख है कि चंद्रगुप्त ने कर्नाटक के कुछ हिस्सों को सुरक्षा प्रदान की थी।

संगम ग्रंथों में प्रारंभिक तमिल लेखकों (सामान्य युग की प्रारंभिक शताब्दियों में) ने ''मोरियार'' का उल्लेख किया है। यह माना जाता है कि यह मौर्यों का ही उल्लेख है जिनका दक्षिण से संपर्क हुआ था; परन्तु संभवतः यह चंद्रगुप्त के उत्तराधिकारियों के शासन

का हवाला देता है। अंततः जैन परम्परा से सूचना मिलती है कि अपने अंतिम दिनों में चंद्रगुप्त ने जैन धर्म अपना लिया था। उसने राजसिंहासन त्याग दिया और एक जैन साधु भद्रबाहु के साथ दक्षिण की ओर चला गया। दक्षिण कर्नाटक में स्थित जैनों के तीर्थ स्थान श्रवणबेलगोल में उसने अपने अंतिम दिन बिताए और एक कट्टर जैन की तरह भूखे रहकर धीरे-धीरे प्राण त्याग दिए।

चंद्रगुप्त का पुत्र बिन्दुसार 297 बी.सी.ई. में गद्दी पर बैठा। भारतीय और क्लासिकल स्रोतों में उसका कम उल्लेख हुआ है। यूनानी बिन्दुसार को अमिट्रोकेट्स के नाम से पुकारते थे। यूनानी स्रोतों में इस बात का भी उल्लेख है कि बिन्दुसार का संबंध सीरिया के सेल्यूसिड वंश के राजा एंटियोकस प्रथम के साथ था, जिससे उसने मीठी मदिरा, सूखा अंजीर और एक तार्किक (प्राचीन यूनानी दर्शन तथा अलंकार या भाषणशास्त्र का शिक्षक) भेजने का आग्रह किया था।

सोलहवीं शताब्दी में तिब्बत के एक बौद्ध पुजारी तारानाथ ने अपनी रचना में बिंदुसार का युद्ध-संबंधी वर्णन लिखा है। कहते हैं उसने पूर्वी और पश्चिमी समुद्रों के बीच का भाग जीत लिया जाता था और 16 नगरों के राजाओं और सरदारों को हरा दिया था। दक्षिण के प्रारंभिक तमिल कवियों ने भूमि पर मौर्यों के रथों के गरजते हुए चलने का ज़िक्र किया है। शायद यह बिदुसार का ही शासनकाल होगा। बहुत से इतिहासकारों का मानना है कि चूंकि अशोक ने केवल कलिंग पर ही विजय प्राप्त की थी, तुंगभद्रा तक का प्रदेश उसके पूर्व शासकों के काल में ही मगध का अंग बन चुका होगा। इसके आधार पर यह अनुमान लगाया जाता है कि बिंदुसार ने दक्कन पर अपना नियंत्रण स्थापित किया और मौर्य साम्राज्य को प्रायःद्वीप में सुदूर दक्षिण स्थित मैसूर तक विस्तारित किया।

हालांकि बिदुसार को ''शत्रु का संहारक'' कहा जाता है, उसके शासनकाल का ब्यौरा भी ठीक से नहीं मिलता है। उसके विजय अभियानों का अनुमान केवल अशोक के साम्राज्य के विस्तार को देखकर लगाया जा सकता है क्योंकि अशोक ने केवल कलिंग (उडीशा) पर विजय प्राप्त की थी। उसका धार्मिक झुकाव *आजीविकों* की तरफ़ था। बौद्ध स्रोतों के अनुसार बिंदुसार की मृत्यु 273-272 बी.सी.ई. के आसपास हुई थी। उसकी मृत्यु के बाद उसके पुत्रों के बीच राजसिंहासन के लिए चार वर्षों तक संघर्ष होता रहा। अंततः 269-268 बी.सी.ई. के आसपास अशोक बिंदुसार का उत्तराधिकारी बना।

अशोक मौर्य

1837 तक अशोक मौर्य के बारे में लोगों को कुछ विशेष मालूम नहीं था। किन्तु 1837 में जेम्स प्रिंसेप ने ब्राह्मी लिपि में लिखा एक शिलालेख पढ़ा। इस शिलालेख में *देवनामपिय पियदस्सी* (देवताओं का प्रिय प्रियदर्शी) नामक एक राजा का उल्लेख था। इसकी तुलना श्रीलंका के इतिवृत *महावंश* में उल्लिखित पियदस्सी से की गई और वस्तुतः तब यह साबित हो सका कि शिलालेख में वर्णित राजा अशोक मौर्य ही था। युद्ध से विमुखता और *धम्म* के सिद्धांतों के आधार पर शासन की स्थापना ने अशोक को विशेष प्रसिद्धि दी। आगे, हम उसके आरंभिक जीवन की प्रासंगिक घटनाओं, कलिंग युद्ध और उसके शासनकाल में मौर्य साम्राज्य के विस्तार पर चर्चा करेंगे।

कलिंग युद्ध

अपने पिता के शासनकाल में अशोक ने उज्जैन और तक्षशिला में राजदूत के रूप में कार्य किया था। यह बताया जाता है कि उसे तक्षशिला में एक विद्रोह को कुचलने के लिए भेजा गया था। बौद्ध स्रोतों से पता चलता है कि तक्षशिला में सफलता प्राप्त करने के बाद उसे उज्जैन भेजा गया था। यह भी कहा जाता है कि उसके व्यक्तिगत जीवन की घटनाओं,

जैसे विदिशा के व्यापारी की पुत्री से उसका विवाह और उससे महेन्द्र और संघमित्रा नामक दो संतानों की प्राप्ति, ने भी अशोक को बौद्ध धर्म अपनाने की दिशा में प्रवृत किया। उसके आरंभिक जीवन की जानकारी ज़्यादातर बौद्ध इतिवृत्तों से होती है। अतः इसकी प्रामाणिकता कुछ संदिग्ध है।

अशोक के राज्यारोहण से संबंधित भी कई किवदंतियां प्रचलित हैं, परन्तु इस तथ्य पर मोटे तौर पर सहमति है कि अशोक युवराज नहीं था। इसलिए सिंहासन प्राप्त करने के लिए उसे अन्य राजकुमारों के साथ संघर्ष करना पड़ा था। बौद्ध स्रोतों में यह बताया गया है कि बौद्ध धर्म अपनाने से पूर्व अशोक एक दुष्ट राजा था। यह निश्चित रूप में बढ़ा-चढ़ाकर कही हुई बात है। इसका उद्देश्य अशोक की बौद्ध धर्म के प्रति निश्ठा को प्रतिष्ठित करना है। यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि अशोक के परवर्ती जीवन में बौद्ध धर्म की महत्वपूर्ण भूमिका रही, परन्तु उसे कट्टर और दुराग्रही बताने वाले कथनों की सही जांच-परख करनी होगी। अशोक के व्यक्तित्व और विचारों का उल्लेख विस्तृत रूप में उसके कई अभिलेखों में हुआ है, जिसमें उसकी सार्वजनिक और राजनीतिक भूमिका पर प्रकाश डाला गया है। उनसे यह भी पता चलता है कि कलिंग युद्ध के बाद अशोक ने बौद्ध धर्म को अपनाया था।

हालांकि अशोक के पूर्वजों ने दक्कन और दक्षिण के प्रदेशों में प्रवेश पा लिया था और शायद कुछ हिस्सों को जीत भी लिया था, परन्तु कलिंग (आधुनिक उडीशा) अभी तक अविजित था और उसे मौर्य साम्राज्य के नियंत्रण के अधीन लाने का कार्य शेष था। इस इलाके का सामरिक महत्व था क्योंकि स्थल और समुद्र, दोनों से, दक्षिण भारत को जाने वाले मार्गों पर कलिंग का नियंत्रण था। अशोक ने खुद शिलालेख XIII में यह बताया है कि उसके अभिषेक के आठ वर्ष बाद, अर्थात् 260 बी.सी.ई. के आसपास, कलिंग के साथ युद्ध हुआ था। इस युद्ध में कलिंगवासियों को पूरी तरह कुचल दिया गया और ''एक लाख व्यक्ति मारे गए और इससे कई गुना नष्ट हो गए''। अभिलेखों में आगे बताया गया है कि अशोक इस युद्ध में विजयी हुआ, परन्तु युद्ध की विनाशलीला ने सम्राट को शोकाकुल बना दिया और तब उसने अचानक बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया। युद्ध विजय का स्थान *धम्म* विजय ने ले लिया। यह नीति व्यक्तिगत और राजकीय, दोनों स्तरों पर अपनाई गई और प्रजा के प्रति सम्राट और उसके अधिकारियों में मूलभूत परिवर्तन आया।

15.6 अशोक की मृत्यु के समय मगध

विभिन्न स्थानों पर पाये जाने वाले पाषाण शिलालेखों और स्तम्भ अभिलेखों, जिनमें अशोक ने अपनी *धम्म* नीति की चर्चा की है, से अशोककालीन मगध साम्राज्य के क्षेत्रीय - विस्तार पर काफ़ी प्रकाश पड़ता है। अशोक के 14 बृहद शिलालेख, सात स्तम्भ लेख और कुछ लघु शिलालेख प्राप्त हुए हैं। बड़े शिलालेख पेशावर के निकट शहबाज़ गढ़ी और मनसहेरा में, देहरादून के निकट कलसी में, जिला थाणे में सोपारा, काठियावाड़ में, भुवनेश्वर के निकट धौली में और उडीशा के गंजम जिले के जौगदा में पाए गए हैं। लघु शिलालेख कर्नाटक के सिद्धपुर, जतिंगा-रामेश्वर ओर ब्रह्मगिरि नामक स्थानों में मिले हैं। इसके अतिरिक्त, अन्य लघु शिलालेख मध्य प्रदेश में जबलपुर के निकट रूपनाथ में, बिहार के ससाराम में, जयपुर के निकट बैराट में और कर्नाटक के मस्की में मिलते हैं। स्तम्भ लेख, जिसमें अशोक के फ़रमान हैं, दिल्ली में पाया गया है। मूल रूप में इसकी प्राप्ति अम्बाला और मेरठ के निकट टोपरा नामक स्थान से हुई थी। इसके अतिरिक्त, इस प्रकार के अभिलेख उत्तर प्रदेश के कौशाम्बी में लौरिया अरराज, बिहार में लौरिया नन्दनगढ़ और रामपूर्वा, भोपाल के समीप सांची, बनारस के निकट सारनाथ और नेपाल के रूम्मिनडै नामक स्थानों पर मिले हैं। इन स्थलों को इस इकाई में दिए गए नक्शे में दिखाया गया है। इसमें आपको अशोक के शासनकाल में मगध साम्राज्य के क्षेत्रीय विस्तार की सही स्थिति का पता लगेगा। इन

अभिलेखों के स्थापन पर गौर करने से यह बात भी स्पष्ट हो जाएगी कि प्रयत्नपूर्वक इन्हें महत्वपूर्ण स्थल व्यापारिक मार्गों पर स्थापित किया गया था। इसके आधार पर आधुनिक इतिहासकार इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि इसके पीछे उपमहाद्वीप पर नियंत्रण रखना भी एक उद्देश्य था, परन्तु मूल उद्देश्य कच्चे माल के स्रोत पर अधिकार बनाए रखना था।

ये लेख साम्राज्य की सीमा पर रहने वाले लोगों की भी चर्चा करते हैं, इससे ऊपर वर्णित राज्य की सीमा-रेखा की पुष्टि होती है। दक्षिण में चोल, पांड्य, सत्यपुत्र और केरलपुत्रों का उल्लेख हुआ है जो मौर्य साम्राज्य की परिधि से बाहर थे। साम्राज्य के भीतर भी लोगों के मूल और संस्कृति में काफ़ी भिन्नता थी। उदाहरण के लिए, उत्तर-पश्चिम प्रदेश के कम्बोजों और यवनों का उल्लेख मिलता है। उनकी चर्चा के साथ-साथ भोजों, पितनिकों, आंध्रों और पुलिंदों का भी उल्लेख किया गया है जो पश्चिमी भारत और दक्कन में बसे हुए थे।

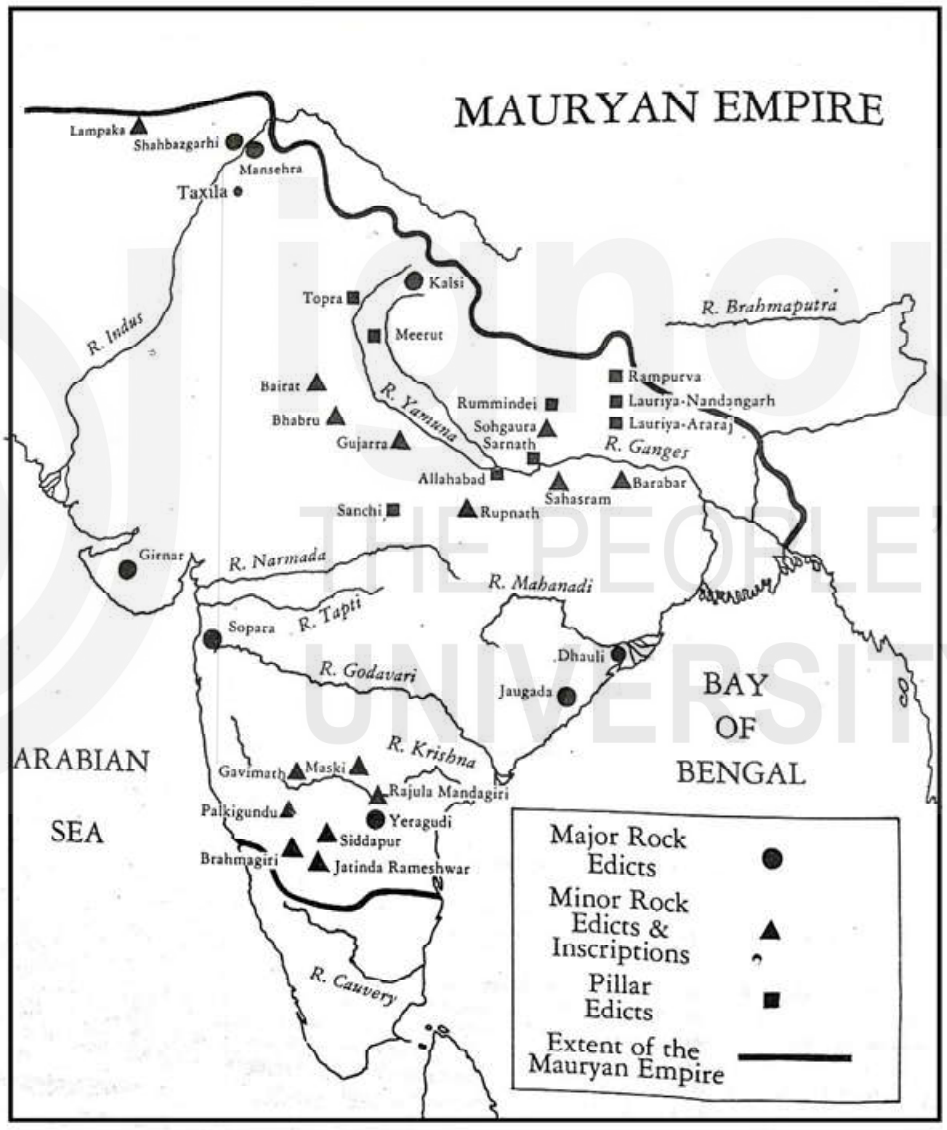

अशोक के शिलालेखों के स्थलों के माध्यम से मौर्य साम्राज्य को दर्शाता मानचित्र। स्रोत : ई. एच.आई.-02, खंड-5।

मानचित्र पर अशोक के लेखों के फैलाव के अलावा कुछ और तथ्यों से भी उसके साम्राज्य के विस्तार का पता चलता है। विजय से हासिल राज्य क्षेत्र को *विजित* और ''शासकीय राज्य-क्षेत्र'' को *राजविषय* कहा गया है, सीमांत राज्य क्षेत्रों को *प्रत्यन्त* की संज्ञा दी गई है। मगध साम्राज्य की सीमा के बाहर उत्तर-पश्चिम में सेल्यूसिड राजा ऐलिओकस द्वितीय का

राज्य था, दक्षिण में चोल, पांड्य, केरलपुत्र और सत्यपुत्रों के राज्य तथा श्रीलंका द्वीप भी साम्राज्य की सीमा से बाहर थे। ऐसा प्रतीत होता है कि पूर्व में उत्तरी और दक्षिण बंगाल मौर्यों के साम्राज्य का अंग था।

इस प्रकार, अशोक के राज्य-काल में मगध साम्राज्य का क्षेत्रीय विस्तार अपनी चरम सीमा पर था। परन्तु, इसके साथ ही साथ यह प्रयत्न भी चल रहा था कि साम्राज्य के अंदर होने वाले सभी युद्धों को समाप्त कर दिया जाए। अहिंसा की नीति को राज्य-नीति के रूप में अपनाया जाना अपने आप में एक अनूठी घटना थी, क्योंकि भारत के राजनीतिक इतिहास में इसे दोहराया नहीं गया। विभिन्न इतिहासकारों ने बार-बार अशोक को उदार तानाशाह के रूप में चित्रित किया है। यह धारणा *धम्म* के व्यावहारिक पक्ष को नज़रअंदाज़ कर देती है। अशोक ने इसके माध्यम से एक विचार पद्धति का सहारा लेकर विशाल साम्राज्य पर नियंत्रण करने की कोशिश की, जिसके अभाव में शासन करना बहुत मुश्किल था। मौर्यों के अभिलेख कुछ महत्वपूर्ण व्यापारिक मार्गों और साम्राज्य के सीमांत प्रदेशों से प्राप्त हुए हैं। परन्तु यह सवाल अभी तक अपनी जगह खड़ा है कि वे क्षेत्र जहां अभिलेख पाए गए और वे क्षेत्र जहां अभिलेख नहीं पाए गए हैं, क्या समान रूप से नियंत्रित किए जाते थे। मौर्यों के प्रशासनिक नियंत्रण और *धम्म* की नीति से जुड़े दोनों सवालों पर इकाई 16 और 17 में विस्तार से चर्चा की जाएगी।

बोध प्रश्न 2

1) मौर्यों से पूर्व के मगध पर पाँच पंक्तियां लिखिए।

.....

.....

.....

.....

2) निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही (✓) व कौन सा गलत (×) है :

क) *उत्तरापथ* गंगा नदी के मार्ग का अनुसरण करने वाला रास्ता था। ( )

ख) पाटलिपुत्र गंगा नदी के दक्षिण में स्थित था। ( )

ग) भारत के विषय में मेगस्थनीज़ के वृतांत की जानकारी हमें बाद के लेखकों से मिलती है। ( )

घ) चंद्रगुप्त के परामर्श पर सिकन्दर ने मगध पर आक्रमण किया। ( )

ड़) नंद और मौर्य परिवार रक्त से संबंधित थे। ( )

च) चंद्रगुप्त सेल्यूकस निकेटर को परास्त करने में सफल रहा। ( )

15.7 सारांश

इस इकाई में हमने प्रथम ऐतिहासिक साम्राज्य से आपको परिचित कराने की कोशिश की है और इसके अध्ययन के लिए एक दिशा प्रदान की है। इसके अतिरिक्त, मगध साम्राज्य के उद्भव और क्षेत्रीय विस्तार की भी चर्चा की गई है। हम आशा करते हैं कि इस इकाई को पढ़ने के बाद आपः

- मगध की भौगोलिक स्थिति का सामरिक महत्व समझ गए होंगे और इसके उत्थान में सहायक महत्वपूर्ण कारकों से परिचित हो चुके होंगे।
- उन स्रोतों के बारे में जान गए होंगे जिनकी सहायता से मगध, खासकर मौर्य शासन, के राजनीतिक इतिहास के लेखन में सहायता मिल सकती है।

- मौर्य शासन के उद्‌भव के पूर्व मगध के आरंभिक इतिहास की प्रमुख घटनाओं की जानकारी प्राप्त कर चुके होंगे।
- मौर्य परिवार के मूल और उसके आरंभिक इतिहास का विवरण प्राप्त कर चुके होंगे।
- चंद्रगुप्त मौर्य और बिंदुसार की विस्तार नीति की जानकारी प्राप्त कर चुके होंगे।
- अशोक मौर्य के राज्यारोहण से लेकर कलिंग युद्ध तक की घटनाओं को जान चुके होंगे।
- अशोक की मृत्यु के समय मगध साम्राज्य के विस्तार की सीमाएं जान सके होंगे।

15.8 शब्दावली

अधिशेष : ज़रूरत पूरी होने के बाद बची सामग्री, आर्थिक संदर्भ में आवश्यकता पूर्ति के बाद बचा हुआ अतिरिक्त उत्पादन।

उत्तरापथ : उत्तरी स्थल मार्ग जो हिमालय की पहाड़ियों तक जाता था।

उदारवादी निरंकुशता : एक अच्छा और उदार राजा जिसके हाथ में पूर्ण नियंत्रण हो।

***चक्रवर्ती* क्षेत्र** : *चक्रवर्ती* या एकछत्र सम्राट का अधिकार-क्षेत्र।

''क्लासिकल स्रोत'' : प्राचीन भारतीय इतिहास जानने के लिए यूनानी स्रोत।

तनाशाह : एक निरंकुश राजा जिसके प्राधिकार पर कोई अंकुश न हो।

***धम्म*/धर्म** : शाब्दिक अर्थ ''सार्वभौम व्यवस्था''; परन्तु अशोक के अभिलेखों में इसका उल्लेख ''धर्म निष्ठा'' के रूप में हुआ है।

सप्तांग : सात अंग।

सोफ़िस्ट : यूनानी दर्शन; शाब्दि अर्थ है छल तर्क में विश्वास रखने वाला दार्शनिक।

15.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) भाग 15.2 देखें।

2) भाग 15.3 देखें।

बोध प्रश्न 2

1) भाग 15.4 देखिए।

2) क) × ख) × ग) ✓ घ) × ड.) × च) ✓

15.10 संदर्भ ग्रंथ

बैशम, ए. एल. (1967). *द वंडर दैट वॉस इंडिया.* नई दिल्ली।

बौनगार्ड-लैविन, जी. एम. (1985). *मौर्यन इंडिया.* नई दिल्ली।

नीलकंठ शास्त्री, के. ए. (1967) (संपादित). *एज ऑफ द नंदाज़ एण्ड मौर्याज़.* दिल्ली।

शर्मा. आर. एस. (2005). *इंडियाज़ एंशियंट पास्ट.* ऑक्सफॉर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

थापर, रोमिला (2002). *द पेंगुइन हिस्ट्री ऑफ अर्ली इंडिया : फ्रॉम द ओरिजिन्स टू ए.डी. 1300.* पेंगुइन बुक्स।